रेकी, सहज योग.. और मेस्मेरिज़्म

डॉ. सुशील जोशी

आजकल रेकी, चुम्बक चिकित्सा, सहज योग वगैरह बहुत लोकप्रिय हो चले हैं। वास्तु भी काफी ख्याति प्राप्त कर रहा है। लेकिन यह सवाल फिर भी पूछा जाता है कि क्या ये कारगर हैं। मेरे पास इन सबका बहुत ही सीमित अनुभव है। अतः इस सवाल का जवाब देने में मैं कठिनाई महसूस करता हूं। किन्तु हाल ही में मैंने स्टीफन जे गोल्ड नामक प्रसिद्ध विज्ञान लेखक का एक लेख पढ़ा। इस लेख ने सीधे-सीधे उपरोक्त सवाल का जवाब तो नहीं दिया मगर जवाब पाने की दिशा अवश्य स्पष्ट कर दी। यहां बरास्ते मेस्मरिज़्म के रेकी आदि की बात की गई है।

मेस्मेरिज़्म

अट्ठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में फ्रान्स में एक व्यक्ति हुए थे फ्रान्ज़ एन्तोन मेस्मर। मेस्मेरिज़्म या मेस्मेराइज़ेशन इन्हीं के नाम से बने शब्द हैं। आज हम मेस्मेरिज़्म का अर्थ सम्मोहन से लगाते हैं किन्तु अट्ठारहवीं सदी के फ्रान्स में इसका अर्थ कुछ और ही था। मेस्मर ने 'जन्तु चुम्बकत्व' की विचित्र किन्तु आकर्षक संकल्पना विकसित की थी। उनका कहना था कि पूरे ब्रह्मण्ड में एक तरल विद्यमान है जो समस्त पिण्डों (सजीव व निर्जीव) को आपस में जोड़ता है। उनके मुताबिक इस तरल को हम अलग-अलग नामों से जानते हैं : ग्रहों की गति के संदर्भ में हम इसे गुरुत्व कहते हैं, गाज गिरती है तो इसी को हम विद्युत के रूप में देखते हैं और दिक्सूचक यंत्र में हम इसे चुम्बकत्व कह देते हैं। यही तरल सजीवों में भी प्रवाहित होता है और इसे 'जन्तु चुम्बकत्व' का नाम दिया जाता है। यदि इस प्रवाह में कोई रुकावट पैदा हो जाए तो रोग उत्पन्न होते हैं। इन रोगों का इलाज चुम्बकत्व के प्रवाह को बहाल करके किया जा सकता है।

यह विचित्र तरह से दमकती अर्द्ध प्रतिमा उन्नीसवीं सदी के अंग्रेज़ डॉ. जॉन इलिओस्टन की है, जिन्होंने मेस्मरिज़्म को फैलाने में अपना जीवन लगा दिया। लेकिन इसे एक चिकित्सा पद्धति का दर्जा न मिल सका।

सवाल यह है कि चुम्बकत्व का प्रवाह अवरुद्ध होने पर उसे पुनः स्थापित कैसे किया जाए। मेस्मर ने इसकी भी विधि विकसित की। मेस्मर के मुताबिक किसी-किसी व्यक्ति में असाधारण रूप से शक्तिशाली चुम्बकत्व होता है। ऐसा व्यक्ति यदि उचित प्रशिक्षण प्राप्त कर ले तो वह अन्य व्यक्तियों के शरीर के चुम्बकीय ध्रुवों को पहचान सकता है। अब इन ध्रुवों की मालिश करके वह मरीज़ के अवरुद्ध चुम्बकत्व को फिर से प्रवाह में ला सकता है।

उपचार विधि

ज़ाहिर है कि स्वयं मेस्मर में यह अद्भुत शक्ति थी। किसी मरीज़ का इलाज करने के लिए वे मरीज़ के ठीक सामने बैठ जाते और उसके घुटनों को अपने घुटनों के बीच दबा लेते। इसके बाद वे मरीज़ की उंगलियों को अपनी उंगलियों से छूते व उसके चुम्बकत्व प्रवाह को सामान्य करने का प्रयास करते। इसके परिणाम प्रायः नाटकीय होते थे। चन्द मिनटों में ही मरीज़ लगभग 'सन्निपात' की स्थिति में होता। मरीज़ का शरीर थर्राने लगता, वह हाथ-पांव फेंकने लगता, दांत किटकिटाने लगता, चीखता-चिल्लाता और अन्त में बेहोश हो जाता। यह उपचार कई बार दोहराया जाता ताकि चुम्बकत्व का प्रवाह भलीभांति होने लगे। इस तरह मेस्मर उपचार करते थे। उनके कट्टर आलोचक भी मानते हैं कि इससे कुछ मरीज़ों का तो रोग निवारण होता ही था।

धीरे-धीरे मेस्मर बहुत लोकप्रिय

हो गए और मरीज़ों की संख्या बढ़ती गई। लिहाज़ा एक-एक मरीज़ का इलाज करना सम्भव न रहा। तो मेस्मर ने बड़ी संख्या में मरीज़ों का एक साथ इलाज करने की तकनीक विकसित की। अब स्वयं मेस्मर अपने 'शक्तिशाली चुम्बकत्व' से किसी निर्जीव वस्तु को 'चुम्बकित' कर देते थे और फिर इस 'चुम्बकित वस्तु' का उपयोग इलाज हेतु करते। तरीका बहुत रोचक था। एक कमरे में एक बड़ी बाल्टी में 'चुम्बकित पानी' भरा जाता और उसमें लोहे की बीस छड़ें डाल दी जाती थीं। बीस मरीज़ इन छड़ों को पकड़कर खड़े हो जाते थे। यदि मरीज़ों की संख्या बीस से ज़्यादा होती तो ये लोग अपना बायां अंगूठा आगे बढ़ाते, जिसे अन्य मरीज़ अपने दाएं हाथ से पकड़ लेते और स्वयं अपना बायां अंगूठा किसी और को दे देते। इस तरह से एक बड़ी शृंखला बन जाती और 'चुम्बकत्व' का प्रवाह होने लगता। जल्दी ही कुछ मरीज़ 'चरम क्रांति' या सन्निपातनुमा हालत में पहुंच जाते और उन्हें एक अन्य कमरे में पहुंचा दिया जाता। प्रभाव बढ़ाने के लिए कमरे की दीवारों पर आइने लगे होते थे। कुछ खुद को देखकर और कुछ दूसरों को देखकर मरीज़ों पर अतिरिक्त प्रभाव पड़ता और धीरे-धीरे कई मरीज़ 'चरमोत्कर्ष' अनुभव करने लगते थे।

इस अनुभव से गुज़रकर स्वस्थ होने के लिए मरीज़ों से अच्छी खासी रकम वसूल की जाती थी। मगर गरीब मरीज़ों के लिए भी एक व्यवस्था थी। मेस्मर अपने बगीचे के पेड़ों को 'चुम्बकित' कर देते थे, जिनसे लिपटकर गरीब लोग स्वास्थ्य लाभ कर सकते थे।

जांच आयोग का गठन

बहरहाल, मेस्मर व उनका चुंम्बकत्व बहुत लोकप्रिय हो चला था और इसमें कई विकृतियां भी उत्पन्न होने लगी थीं। कारण जो भी रहे हों मगर सम्राट लुई (सोलहवें) ने इसकी जांच करने के लिए एक आयोग नियुक्त किया। आयोग में उस समय के दो प्रसिद्ध वैज्ञानिक बेन्जामिन फ्रेन्कलिन और एन्तोन लेवॉज़िए भी थे। इस आयोग का गठन 1784 में किया गया था। सुधी पाठक शायद गौर करेंगे कि यूरोप में यह दौर 'रोशन ख्याली का दौर' था और हर किस्म की गैर-तार्किकता का विरोध जारी था। आयोग के कार्य को इसी रोशनी में देखा जाना चाहिए। दरअसल आयोग ने मेस्मेरिज़्म की जांच के लिए उस समय उपलब्ध आधुनिकतम वैज्ञानिक विधियों का सहारा लिया था। आयोग की रिपोर्ट को गैर-तार्किकता के विरुद्ध एक महत्वपूर्ण दस्तावेज माना जाना चाहिए।

आयोग की कार्य प्रणाली

सर्वप्रथम आयोग ने यह तय किया कि जन्तु चुम्बकत्व अथवा इस सर्वव्यापी तरल के अस्तित्व का प्रमाण खोजा जाए। किन्तु मेस्मर व उनके शिष्यों ने स्पष्ट कर दिया कि यह तरल रंगहीन व गंधहीन है जिसके भौतिक अस्तित्व की बात करना फिजूल है। इसे मात्र इसके प्रभावों के आधार पर 'देखा' जा सकता है। आयोग (मूलतः फ्रेन्कलिन व लेवॉज़िए) के समक्ष यह एक नई चुनौती थी। अलबत्ता उन्होंने इसके प्रभावों के बारे में अत्यन्त सुन्दर प्रयोग डिज़ाइन व क्रियान्वित किए। इसके लिए उन्होंने सर्वप्रथम जो काम किया वह विज्ञान की विधि की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण था - किसी घटना के विभिन्न कारणों को अलग-अलग करना और फिर समस्त कारणों को स्थिर रखकर किसी एक को बदलकर उसका प्रभाव आंकना। आम तौर पर इस सरल सी बात को अनदेखा कर दिया जाता है।

मेस्मेरिज़्म के प्रभावों के बारे में जांचने के लिए अत्यन्त सुन्दर प्रयोग डिज़ाइन व क्रियान्वित किए गए। इसके लिए फ्रेन्कलिन व लेवॉज़िए ने सर्वप्रथम जो काम किया वह विज्ञान की विधि की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण था - किसी घटना के विभिन्न कारणों को अलग-अलग करना और फिर समस्त कारणों को स्थिर रखकर किसी एक को बदलकर उसका प्रभाव आंकना।

आयोग ने अपनी जांच की शुरुआत एक बहुत ही आसान वक्तव्य से की थी, "बगैर उपयोगी हुए भी जन्तु चुम्बकत्व का अस्तित्व हो सकता है किन्तु यदि उसका अस्तित्व नहीं है तो वह उपयोगी कदापि नहीं हो सकता।"

किन्तु इसके अस्तित्व का पता लगाना असम्भव था, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है। इस मामले में आयोग

1890 के दौरान पेरिसवासी अल्बर्ट डी रोकास चीज़ों को सम्मोहित किया करते थे। इससे ये चीज़ें मानव शरीर से उत्सर्जित होने वाली रंगीन किरणों के बीच भेद कर पाने में सक्षम हो जाती थीं। इस किताब के चित्रों में ऐसा ही कुछ दर्शाया गया है। मेस्मर के इस सिद्धांत का इस्तेमाल करते हुए कि शरीर के दो ध्रुव होते हैं अल्बर्ट ने बताया कि आम तौर पर उत्तरी ध्रुव नीली किरणें और दक्षिण ध्रुव लाल किरणें उत्सर्जित करते हैं। लेकिन ऐसा ही होगा यह नियत नहीं है।

ने 1814 में प्रकाशित अपनी रिपोर्ट में कहा था :

"आयोग के सदस्यों को यह समझते देर न लगी कि यह तरल समस्त संवेदनाओं से बचा रहता है।.. यदि हमारे अन्दर व आसपास इसका अस्तित्व है तो यह पूर्णत: संवेदनाहीन है।"

अत: आयोग ने इसके प्रभावों पर ध्यान केन्द्रित किया। यानी जांच का फोकस या तो इलाज पर हो गया अथवा तात्कालिक नाटकीय असर पर। आयोग ने इलाज को जांच का आधार मानने से इंकार करते हुए तीन कारण गिनाए थे - पहला कि इलाज में बहुत समय लगता है और मेस्मेरिक दीवानगी बढ़ती जा रही है; दूसरा कि स्वास्थ्य लाभ तो कई कारण से सम्भव है तथा अन्य कारणों को मेस्मेरिज़्म से अलग करना नामुमकिन है; तीसरा कि समय के साथ कई बीमारियों का इलाज तो प्रकृति स्वयं कर देती है।

किन्तु मेस्मर स्वयं चाहते थे कि जांच का आधार यही होना चाहिए कि मरीज़ों को स्वास्थ्य लाभ होता है या नहीं। जब आयोग ने यह बात नहीं मानी तो मेस्मर ने सहयोग देने से इंकार कर दिया। अलबत्ता मेस्मर के एक प्रमुख शिष्य चार्ल्स डेस्लॉन ने आयोग के साथ सहयोग किया। उसने आयोग द्वारा की जा रही जांच के लिए लोगों व वस्तुओं को 'चुम्बकित' करके दिखाने का प्रयास किया।

खुद पर प्रयोग

सबसे पहले आयोग के सदस्यों ने खुद अपने ऊपर प्रयोग किए। उन्होंने डेस्लॉन से कहा कि वह उन्हें प्रत्यक्ष रूप से या किसी चुम्बकित वस्तु के ज़रिए चुम्बकित करे। कई दिनों की कोशिश के बावजूद असर सिर्फ इतना हुआ कि लेवॉज़िए और फ्रेन्कलीन बैठे-बैठे ऊब जाते। वे कभी बाल्टी की छड़ों को पकड़कर तो कभी एक-दूसरे के अंगूठे पकड़कर इन्तज़ार करते रहते। और नतीजा होता ढाक के तीन पात। अलबत्ता खुद पर असर न होने के तथ्य के आधार पर आयोग के सदस्यों ने 'जन्तु चुम्बकत्व' को नकारने की जल्दबाज़ी नहीं की। उन्होंने सोचा कि शायद चुम्बकत्व का असर सिर्फ बीमार व्यक्तियों पर होता है। लिहाज़ा बीमार व्यक्तियों पर प्रयोग आरम्भ किए गए।

दो तरह के प्रयोग

लेवॉज़िए को यकीन था कि 'चुम्बकत्व' का असर वास्तव में मनोवैज्ञानिक है - यानी यह सम्मोहन का परिणाम है। इसके लिए वे प्रयोग करके देखना चाहते थे। इन प्रयोगों में दो कारकों को अलग-अलग करके देखना ज़रूरी था - एक वे प्रयोग जिनमें कथित 'चुम्बकत्व' तो रहे किन्तु सम्मोहन की गुंजाइश न रहे; और दूसरे वे प्रयोग जिनमें सम्मोहन रहे किन्तु चुम्बकत्व न हो। अर्थात् वे मनोवैज्ञानिक असर और किसी तरल के भौतिक असर को अलग-अलग करके देखना चाहते थे।

सबसे पहला प्रयोग निम्नानुसार था। फ्रेन्कलीन ने डेस्लॉन से कहा कि वह बगीचे में पांच पेड़ों में से एक को 'चुम्बकित' कर दे। अब एक युवक को कहा गया कि

वह एक-एक करके इन पांच पेड़ों का आलिंगन करे। डेस्लॉन ने पहले ही यह बता दिया था कि उक्त युवक चुम्बकत्व के प्रति अति संवेदी है। युवक को यह नहीं बताया गया था कि कौन सा पेड़ चुम्बकित है। युवक ने एक-एक करके पेड़ों से लिपटना शुरू किया और बताया कि वह बढ़ते क्रम में चुम्बकत्व महसूस कर रहा है। चौथे पेड़ तक आते-आते वह 'चरम' पर पहुंचकर बेहोश हो गया। जबकि हकीकत यह थी कि डेस्लॉन ने पांचवें पेड़ को चुम्बकित किया था जिसे युवक ने छुआ तक नहीं था। परन्तु मेस्मर व उनके शिष्यों ने इस परिणाम को खारिज कर दिया। उनका कहना था कि सभी पेड़ों में थोड़ा बहुत कुदरती चुम्बकत्व तो होता ही है और डेस्लॉन की उपस्थिति ने इस प्रभाव में इज़ाफा कर दिया होगा। लेवॉज़िए का दो टूक जवाब था कि फिर तो बगीचे में चहलकदमी करते व्यक्तियों पर बड़ा खतरा है।

आयोग ने इस प्रकार के कई और प्रयोग किए जिनसे यही निष्कर्ष निकला कि बगैर चुम्बकत्व के भी मनोवैज्ञानिक असर पड़ता है तथा नाटकीय हलचल पैदा हो जाती है। मसलन उन्होंने एक महिला की आंखों पर पट्टी बांधकर उससे कहा कि डेस्लॉन कमरे में है और उसे चुम्बकत्व से भर रहा है। डेस्लॉन आसपास कहीं नहीं था मगर उस

मेस्मर के पेरिस स्थित सैलून (बेक्युवेट) का समकालीन चित्र जिसमें कुर्सी पर बैठी महिला को सम्मोहित किया जा रहा है।

महिला पर दौरा पड़ गया। इसके बाद महिला की आंखों से पट्टी हटाकर उसे बताया गया कि डेस्लॉन पास के कमरे में बैठा उस पर चुम्बकत्व की बौछार कर रहा है। एक बार फिर महिला को मेस्मेरिक दौरा पड़ गया। दोनों ही मामलों में 'चुम्बकत्व' का कहीं नामोनिशान न था मगर महिला के दौरे काफी उग्र थे।

एक और प्रयोग गौरतलब है। कई सारी प्यालियों में पानी भरा गया तथा इनमें से एक को 'चुम्बकित' कर दिया गया। एक अत्यन्त संवेदी महिला को इन प्यालियों को छूने को कहा गया। दूसरी प्याली को छूने पर वह कांपने लगी और चौथी प्याली तक तो उस पर ज़बर्दस्त दौरा पड़ चुका था। जब वह थोड़ी सम्हली और पीने को पानी मांगा तो लेवॉज़िए ने उसे चुम्बकित पानी थमा दिया। इसे वह शान्ति से पी गई और उसने राहत महसूस की।

अब इससे विपरीत प्रयोगों की बारी आई जिनमें चुम्बकत्व तो हो मगर सम्मोहन (मनोवैज्ञानिक प्रभाव) न हो। आयोग के सदस्यों ने फ्रेन्कलिन के घर में एक कमरे का दरवाज़ा निकाल दिया और उसकी जगह कागज़ की दीवार चिपका दी। डेस्लॉन का कहना था कि चुम्बकीय तरल कागज़ में से सुगमता से प्रवाहित होता है।

एक महिला को आमंत्रित किया गया जो मेस्मेरिक तरल के प्रति बहुत संवेदी थी। उसे इस कागज़ की दीवार के पास ही बैठने को कहा गया। दीवार के दूसरी ओर एक दक्ष चुम्बकत्व प्रवाहक आधे घण्टे तक उस पर चुम्बकत्व की बौछार करता रहा। पूरे आधे घण्टे तक वह महिला मज़े में गपशप करती रही। किन्तु जैसे ही वह चुम्बकत्व प्रवाहक कमरे में आया उसके कुछ ही मिनट बाद उस महिला को दौरा पड़ गया।

इन सारे प्रयोगों का निष्कर्ष यही था कि मेस्मर के सर्वव्यापी तरल का कोई प्रमाण नहीं है। इसके समस्त प्रभावों का श्रेय कल्पनाशक्ति को दिया जा सकता है। आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा था:

"चुम्बकित करने का काम दरअसल कल्पना को बढ़ाने की कला है।"

आयोग ने इस प्रकार से मेस्मर के दावों को पूरी तरह से गलत साबित कर दिया। मगर क्या इस तरह की गैर-तार्किक बातों पर हमेशा के लिए रोक लग गई? सवाल तो यह है कि ये बातें बार-बार अलग-अलग रूपों में

''मेस्मेरिज़्म का आकर्षण उन दो उम्मीदों पर टिका है जो इन्सानों को सर्वाधिक प्रभावित करती हैं : भविष्य को जानने की उम्मीद और अपने जीवन के दिन बढ़ाने की उम्मीद।''

उभरती ही रहती हैं। चाहे पीपल के दिन-रात ऑक्सीजन छोड़ने की बात हो या हवन से बारिश करवाने की बात या फिर चमत्कारिक औषधियों की बात हो; हमें लगातार इनसे जूझना होगा। आखिर क्यों हम इनके चक्कर में पड़ते रहते हैं? इसके कारणों पर गौर करते हुए आयोग ने कई तथ्यों की ओर इशारा किया था।

पहली बात तो यह है कि जब भी कोई दावा किया जाता है कि फलां तरीके से इलाज हो जाता है तो यह देखना होता है कि अन्तिम परिणाम के कई सम्भव कारण हो सकते हैं। इन कारणों को अलग-अलग करके कार्य-कारण सम्बंध स्थापित करना आसान नहीं होता। यदि किसी व्यक्ति को रेकी के बाद स्वास्थ्य लाभ हुआ है तो इसका स्वतः यह अर्थ नहीं है कि ऐसा रेकी के कारण हुआ है।

दूसरी बात यह है कि कई बार पूरा मामला सम्भावितओं का सवाल हो जाता है। मसलन कोई भविष्यवाणी सही भी निकल सकती है और गलत भी। यदि हम सिर्फ उन्हीं घटनाओं को याद रखें जब भविष्यवाणी सही निकली थी तो हमारे निष्कर्ष गलत निकलेंगे।

गैर-तार्किक तरीकों के प्रति मोह का एक कारण और भी है। जब हमारा जीवन हताशाओं व कष्टों से भरपूर है तो हमें जहां भी राहत मिलने की उम्मीद होती है हम उसी ओर बढ़ने को तत्पर होते हैं। आयोग ने अपनी रिपोर्ट में इसी बात को इन शब्दों में कहा था :

बहरहाल, इस पूरे घटनाक्रम को बयान करने का मकसद यह दिखाना नहीं है कि मेस्मर की विधि से किसी को स्वास्थ्य लाभ नहीं होता होगा। स्वयं मेस्मर ने जांच आयोग से यही कहा था कि उसकी विधि को परखने का एकमात्र तरीका यह है कि चंगे हो चुके मरीज़ों को देखा जाए। काफी सम्भव है कि मेस्मर विधि से कई लोगों को लाभ हुआ होगा। किन्तु उन्हें यह लाभ किसी चुम्बकत्व या मेस्मेरिक तरल के अस्तित्व या प्रवाह की वजह से नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक कारणों से हुआ होगा। आज भी कई उपचार विधियों से लोगों को सम्भवतः लाभ पहुंचता होगा मगर उनका प्रभाव किन्हीं तरंगों या ऊर्जाओं की वजह से शायद न हो। पूरे घटनाक्रम से यह बात उभरती है कि स्वास्थ्य के संदर्भ में मनोविज्ञान की भूमिका महत्वपूर्ण है।

हमारे यहां चिकित्सा अनुसंधान की कई संस्थाएं हैं। मुझे पता नहीं कि इनमें से किसी ने भी किसी ऐसी उपचार पद्धति की जांच का काम किया है या नहीं। शायद नहीं। ऐसी जांच न होने का एक नुकसान यह होता है कि लोगों के सामने हर किस्म के दावे-प्रतिदावे प्रस्तुत होते रहते हैं और वे इस या उस पर भरोसा करते हैं - कभी अकारण ही और कभी-कभी आस्थाओं के भरोसे।

(स्रोत फीचर्स)

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

वार्षिक सदस्यता शुल्क 150 रुपए कृपया एकलव्य, भोपाल के नाम बने ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 के पते पर भेजें